डॉ. अनुरुद्ध बायन

जन्म- 26 दिसम्बर 1972। असम के बरपेटा जिले के बहरी गांव में जन्मे डॉ. अनुरुद्ध बायन ने बी.ए. प्रागज्योतिष कॉलेज (गुवाहाटी) तथा एम. ए. हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय से पूरी की। उन्होंने एम.फिल. (विनायक विश्वविद्यालय, सालेम) तथा पीएच.डी. (बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर) की डिग्री भी ली। सम्प्रति आप हिंदी विभाग, मध्य कामरूप कॉलेज (शोभा, बरपेटा, असम) के विभागाध्यक्ष हैं। डॉ. बायन ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं के लिए लेखन कार्य किया। आपकी संपादित पुस्तकों में 'रामधारी सिंह दिनकर की उर्वशी का सौन्दर्य शास्त्रीय अनुशीलन', 'भारतीय लोक जीवनः एक अध्ययन', 'लोकपरंपरा और भारतीय संस्कृति' आदि प्रमुख हैं।

स्थायी निवास- गलियाहाटी, जी.सी. लेन, बरपेटा (असम)।

पुष्पा कुमारी

बिहार के सीतामढ़ी जिला में 10 अप्रैल 1990 को जन्मीं पुष्पा कुमारी ने अपनी प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा दिल्ली से ही पूरी की है। आपने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से बी.ए. और जामिया मिल्लिया इस्लामिया से एम. ए. किया है। वर्तमान में आप गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में एम.फिल. हिंदी साहित्य की शोधार्थी हैं। आपने अजीम प्रेमजी फाउंडेशन (राजस्थान) में टीचर एजुकेटर (कैंपस एसोसिएट) के रूप में कार्य किया है। आपकी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित हुई हैं। आपकी दो संपादित पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई हैं। आप शोधसंवाद-रिसर्चफोरम (संस्था) की संस्थापक सदस्या होने के साथ वहां एकेडमिक सचिव के रूप में कार्य भी कर रही हैं। आप 'एकेडमिक जगत' (द्विभाषी मासिक पत्रिका) से सह-सम्पादक के रूप में जुड़ी हुई हैं।

स्थायी निवास- मुनिरका, नई दिल्ली।

एकेडमिक पब्लिशिंग नेटवर्क
मंडावली, दिल्ली-110092,
बरपेटा, असम-781352

₹650.00

9 788194 545132

साहित्य संस्कृति का नया दौर

सम्पादक: डॉ. जाहिदुल दीवान, डॉ. अनुरुद्ध बायन, पुष्पा कुमारी

साहित्य संस्कृति का नया दौर

सम्पादक

डॉ. जाहिदुल दीवान । डॉ. अनुरुद्ध बायन । पुष्पा कुमारी

ISBN: 978-81-945451-3-2
प्रकाशक : एकेडमिक पब्लिशिंग नेटवर्क
16–ए, मंडावली / फज़लपुर
मंडावली, दिल्ली–110092

शाखा: कयाकुछि, बरपेटा, असम– 781352
संस्करण : 2020
मूल्य: ₹ 650
© प्रकाशक
आवरण : जितेन्द्र पुरी
कम्प्यूटर कम्पोजिंग : शिव शक्ति इंटरप्राइजेज
नई दिल्ली–110016
मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली–110002
मोबा. : 7678245992, 9667062977
ई–मेल: apnetwork18@gmail.com
वेबसाइट: https://academicpublish.in/

Sahitya Sanskriti Ka Naya Daur
Book Ed. by Dr. Jahidul Dewan, Dr. Anuruddha Bayan, Pushpa Kumari
For Madhya Kamrup College and Shodhsamvad-Research Forum published by Academic Publishing Network

साहित्य संस्कृति का नया दौर

संपादक
डॉ. जाहिदुल दीवान
डॉ. अनुरुद्ध बायन
पुष्पा कुमारी

एकेडमिक पब्लिशिंग नेटवर्क

विषय–सूची

भूमिका		7
1. भारतीय साहित्य: अवधारणा व स्वरूप	डॉ. लवलीन कौर	9
2. भारतीय संस्कृति और साहित्य	पूनम सिंह	21
3. संस्कृति की विशेषता	डॉ. प्रदीप कुमार पेटवाल	28
4. भारतीय संस्कृति का पारंपरिक स्वरूप	डॉ. तरूणा यादव	37
5. लोक–संस्कृति और लोक संचार	प्रियंका कुमारी	43
6. सिनेमा और भारतीय संस्कृति	मुकेश जैन	49
7. भारत की ग्रामीण और शहरी संस्कृति	मनोज कुमार	56
8. वर्तमान परिदृश्य में रंगमंच की स्थिति	डॉ. प्रभात शर्मा	62
9. भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता	चन्द्रशेखर नाथ झा	69
10. जैन आचार–पद्धति	डॉ. बीना चौधरी	75
11. हिंदी नवगीत की सांस्कृतिक चेतना	डॉली सिंह	84
12. हिंदी साहित्य और पूंजीवाद	डॉ. बिजेंद्र कुमार	91
13. भारतीय संस्कृति का वैश्विक परिदृश्य	नीतू	103
14. गयाना में भारतीय संस्कृति	राजू कुमार	110

हिंदी साहित्य और पूंजीवाद

डॉ. बिजेंद्र कुमार
प्राध्यापक, हिंदी–विभाग
राधाकृष्ण सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कैथल

साहित्य प्राचीन काल से ही मानव की चित्तवृत्तियों का प्रतिबिंब रहा है। यह साहित्य ही होता है जो मानव को भूत काल से शिक्षा दिलवाकर, अपना वर्तमान एवं भविष्य सुदृढ़ करने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य मानव एवं समाज के प्रत्येक पक्ष पर अपनी आँख रखता है तथा उसको साहित्य में समाहित कर, मानव जीवन के लिए सुगम बनाता है। ऐसा ही एक पक्ष है– पूँजीवाद। हिंदी साहित्य और पूंजीवाद का गहरा संबंध रहा है। हालांकि भारतीय समाज और संस्कृति में पूंजीवाद की अवधारणा उस रूप में दिखाई नही देती थी जैसी पाशचात्य देशों में दिखाई देती रही है। इसका कारण है कि भारतीय संस्कृति अध्यात्म पर आधारित रही है। जहां पंचभूतों से निर्मित मानव का एकमात्र लक्ष्य कर्म करते हुए परमतत्त्व को प्राप्त करना रहा है। यहाँ जीवन के चारमूल– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में सबसे महत्वपूर्ण मोक्ष को माना जाता रहा है। इसका अर्थ यह नहीं था कि अर्थ, धर्म और काम का कोई महत्त्व नहीं था। यहाँ यह सब जीवन जीने के एवं परमतत्त्व की प्राप्ति के साधन मात्र रहे हैं। भारत वर्ष में अर्थ संचय भी केवल जीवन जीने और मानव जीवन के कल्याण के लिए ही मान्य था। लेकिन धीरे–धीरे जब पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ तो पूंजीवाद का सिद्धांत भी बढ़ता चला गया। क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति भौतिकवाद में विश्वास रखती है। यहाँ जीवन जीने के साधन जुटाने के लिए वर्ग संघर्ष होने लगा और जिस कारण पूंजीवाद के अंतर्गत शोषण को बढ़ावा मिला। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में इसका जन्म हुआ। इसके जन्मदाता थे जर्मनी के विद्वान कार्लमार्क्स, जिन्होंने 'कैपिटल' नाम का विश्व–विश्रुत ग्रंथ रचकर वर्ग संघर्ष को बढ़ावा दिया तथा पूंजीवाद में शोषक एवं शोषित दो वर्ग बना दिए। यहीं से हिंदी साहित्य में पूंजीवाद का प्रारंभ होता है। हालांकि पूंजीवाद में शोषण केवल मजदूरों एवं किसानों का होता है, तो भी भारत वर्ष में यह शोषण मुगलों के काल से ही चलता आ रहा था, जहां साहूकार, महाजन, सामंत, जमींदार आदि गरीबों, मजदूरों, किसानों आदि का शोषण कर रहे थे। हिंदी साहित्य कारने